Roll No. : .....

Total No. of Questions : **12**] [Total No. of Printed Pages : **4**

APF–2004

M.A. (Final) Examination, 2022

HINDI

Paper - IV (क)

(सूर)

*Time : **3** Hours*] [*Maximum Marks : **100***

खण्ड–अ **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

खण्ड–ब **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

खण्ड–स **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

खण्ड–अ

1. सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर **50** शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए :

   (i) अष्टछाप से क्या तात्पर्य है ? अष्ठछाप कवियों का संक्षिप्त परिचय देते हुए उसमें सूर का स्थान निर्धारित कीजिए।

   (ii) सूरकालीन साहित्यिक परिस्थितियों का उल्लेख कीजिए।

   (iii) सूरदास रीति काव्य के प्रेरक कवि हैं। इस कथन की समीक्षा कीजिए।

   (iv) सूर की दार्शनिकता पर सोदाहरण समीक्षा कीजिए।

(v) सूरसागर पर एक समीक्षात्मक निबंध लिखिए।

(vi) सूरदास के समकालीन सम्प्रदायों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत कीजिए।

(vii) सूरदास के काव्य सौष्ठव का परिचय दीजिए।

(viii) सन्देश काव्य परम्परा में सूर के भ्रमरगीत का स्थान निर्धारित कीजिए।

(ix) सूर की भाषा शैली की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

(x) सूरसागर में उपलब्ध प्रकृति-वर्णन के सौन्दर्य को चित्रित कीजिए।

खण्ड–ब

नोट :– किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर **200** शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

2. जसोदा मदन गोपाल सोवावै

देखि सयन गति त्रिभुवन कपै, ईस बिरंचि भ्रमावै।

असित अरुनसित आलस लोचन उभय पलक परि आवै।

जनु रविगत संकुचित कमल-जुग निसि अलि उड़न न पावै।

स्याम उदर उससित यौं, मानौ दुग्ध-सिंधु छवि पावै।

नाभि-सरोज प्रगट पदमासन उतरि नाल पछितावै।

कर सिर-तर करि स्याम मनोहर अलक अधिक सौभावै।

सूरदास मानौ पन्नगपति, प्रभु ऊपर फन छावै।।

3. सोभित कर नवनीत लिए।

घुटुरुनि चलत रेनु तन मंडित, मुख दधि लेप किये।

चारु कपोल, लोल-लोचन, गोरोचन तिलक दिए।

लट लटकनि, मनुमत्त मधुप गन मादक मधुहिं पिए।

कठुला कंठ, वज्र के हरि नख, राजत रुचिर हिए।

धन्य सूर एकौ पल इहिं सुख, का सत कल्प जिए।।

4. पलना झूलौ मेरे लाल पियारे।

सुसकनि की वारी हौं बलि-बलि, हठ न करहु तुम नंद-दुलारे।

काजर हाथ भरौं जनि मोहन ह्वै है नैना अति रतनारे,

सिर कुलही, पग पहिरि पैजनी, तहाँ जाहु जहँ नंद बबा रे।

देखत यह विनोद धरनीधर, मात पिता बलभद्र ददा रे।

सुर-नर-मुनि कौतूहल भूले, देखत सूर सवै जू कहा रे।।

5. जौ लौं मन कामना न छूटै।

तौ कहा जोग जज्ञ व्रत कीन्हैं बिनु कन तुस को कूटै।।

कहा सनान कियै तीरथ के, अंग भस्म जट जुटै।

कहा पुरान जु पढ़ै अठारह ऊर्ध्व घूम के घूटै।।

जब सोभा की सकल बड़ाई इनतै कछू न खूटै।

करनी और कहै कछु औरे मन दसहूं दिसि टूटै।।

काम, क्रोध मद लोभ शत्रु हैं जो इतननि सो छूटै।

सूरदास तबहीं तम नासै, ज्ञान अगिनि झर फूटै।।

6. बूझत स्याम कौन तू गोरी।

कहां रहत काकी है बेटी, देखी नहीं कहूँ ब्रज खोरी।।

काहे कौ हम ब्रज-तन आवति, खेलती रहीत आपणी पोरी।।

सुनत रहित श्रवननि नंद-ढोटा, करत फिरत माखन-दधि चोरी।।

तुम्हारौ कहा चोरि हम लैहैं, खेलन चलौ संग मिलि जोरी।

सूरदास प्रभु रसिक-सिरोमनि, बातनि भुरह राधिका भोरी।।

7. मुरली कौन सुकृत फल पाए।

अधर सुधा पीवति मोहन कौ, सबै कलंक गँवाए।।

मन कठोर तन गाँठि प्रगट ही, छिद्र बिसाल बनाए।

अंतर सून्य सदा देखियति है, निज कुल बंस सुभाए।

लघुता अंग, नहीं कछु करनी, निरखत नैन लगाए।।

सूरदास प्रभु पानि परसि नित, काम-बेलि अधिकाए।।

8. जोग ठगौरी ब्रज न बिकहै।

मूरी के पातनि के बदलैं, को मुकताहल दैहै।।

यह ब्यौपार तुम्हारौ ऊधौ, ऐसै ही धर्‌यौ रैहै।

जिन पै तैं लै आए ऊधौ, तिन ही के फट समैहैं।।

दाख छाँड़ि कै कटुक निबौरी, को अपने मुख खैहै।

गुन करि मोही 'सूर' साँवरे, को निरगुन निरवै है।।

खण्ड–स

नोट :– किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर **500** शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

9. सूर के जीवन वृत्त से सम्बन्धित सामग्री का मूल्यांकन कीजिए और अपने निष्कर्षों की पुष्टि में उपयुक्त तर्क भी दीजिए।

10. "रीतिकालीन श्रृंगारी कवियों की तरह सूर का श्रृंगार वर्णन वासनासिक्त न होकर भक्तिभाव से प्रेरित ही सिद्ध होता है।" इस कथन की समीक्षा करते हुए अपना स्पष्ट मत दीजिए।

11. "सूरदास में वास्तव में भागवत् के दशम् स्कन्ध की कथा ही ली गयी है।" इस कथन को दृष्टि में रखते हुए कृष्ण लीला में सूरदास की नवीन उद्‌भावनाओं का परिचय दीजिए।

12. "सूर-काव्य भक्ति, कविता और संगीत की सुन्दर त्रिवेणी है।" इस कथन की समीक्षा करते हुए सूर के रीति-काव्य की विशेषताएँ बताइए।